

862. स्वस्तिक :- प्रभु समक्ष जब अक्षत पूजा की जाती है, तब स्वस्तिक की रचना की जाती है। स्वस्तिक में रही चार पंखुड़ियाँ चार गतियों का सूचन करती हैं। अष्ट मंगल में स्वस्तिक की आकृति भी मंगल-स्वरूप है।

863. स्वयंभूरमण समुद्र :- मध्यलोक में जो क्रमशः द्वीप-समुद्र आये हुए हैं, उनमें सबके अंत में स्वयंभूरमण समुद्र है। यह समुद्र सबसे बड़ा अर्थात् आधे राजलोक के विस्तारवाला है, इसमें 1000 योजन लंबे मत्स्य पाए जाते हैं।

30

‘ह’

864. हिंसानुबंधी रौद्रध्यान :- जिस ध्यान में दूसरे जीवों को मार डालने के क्रूर विचार हों, उसे हिंसानुबंधी रौद्रध्यान कहते हैं।

865. हेतुवादोपदेशिकी संज्ञा :- जिसमें मात्र वर्तमान काल का ही विचार हो।

866. हुंडक संस्थान :- यह नाम कर्म की प्रकृति है। इस कर्म के उदय से शरीर के अंगोपांग बेडौल होते हैं।

867. ही :- इसके अनेक अर्थ हैं-

(1) लज्जा (2) एक दिक्कुमारी।

31

‘क्ष’

868. क्षणिक :- एक क्षण बाद जो नष्ट हो जानेवाला हो, वह क्षणिक कहलाता है।

869. क्षणिकवाद :- बौद्धमत, जो प्रत्येक वस्तु को क्षणस्थायी समझता है। इसके मत से प्रत्येक वस्तु दूसरे समय में नष्ट हो जाती है।

870. क्षपक श्रेणी :- घाति कर्मों का क्षय करने के लिए आत्मा क्षपक श्रेणी पर आरुढ़ होती है। क्षपक श्रेणी में रही आत्मा कर्मों को जड़मूल से उखाड़ने का काम करती है। क्षपकश्रेणी का प्रारंभ आठवें गुणस्थानक से होता है और 12वें के अंत में समाप्ति होती है। क्षपक श्रेणी पर आरुढ़ बनी आत्मा अवश्य वीतराग और सर्वज्ञ बनती है।